बिहार विधान-सभा वादवृत

मंगलवार, तिथि २७ जून, १९७२

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान-सभा का कार्य विवरण ।

सभा का अधिवेशन पटना के सभा-सदन में मंगलवार तिथि २७ जून, १९७२ को पूर्वाह्न ९ बजे अध्यक्ष श्री हरिनाथ मिश्र के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ ।

अल्पसूचित प्रश्नोत्तर

राज्य के स्कूलों का राष्ट्रीयकरण

६६ । श्री अम्बिका प्रसाद— क्या मंत्री, शिक्षा विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या यह बात सही है कि सरकार प्राइवेट माध्यमिक एवं राज्य के अन्य स्कूलों को पूर्ण रूप से अपने अधीन में लेने का विचार कर रही है ; यदि हाँ, तो कबतक ?

श्री मिश्री सदा—प्राथमिक विद्यालयों (अल्प संख्यकों को छोड़कर) सरकारी विद्यालयों के रूप में परिणत करने के निर्णय की घोषणा तिथि ८–६–१९७२ को की जा चुकी है ।

अराजकिय विद्यालयों के राष्ट्रीयकरण में कतिपय बाधाएँ हैं;

प्रथमत:, विधि विभाग की राय में गैर-सरकारी उच्च विद्यालयों को बिना मुआवजा दिए स्थायी तौर से नहीं लिया जा सकता है ।

द्वितीय, आर्थिक कारण है । सरकारी दर से वेतनमान देने के लिए प्रारंभ में १८,०६,७१,२९२ रु० (अठारह करोड़, छ: लाख, ७१ हजार २९२, रुपए) की आवश्यकता होगी ।

विद्यालय का निराकरण

४२०/श्री सुरेन्द्र झा सुमन— क्या मंत्री, शिक्षा विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(१) क्या यह बात सही है कि दरभंगा जिले के बेनीपुर प्रखण्ड के बैगनी ग्राम में परमानन्द स्मारक शिवाजी संस्कृत हाई० स्कूल भू० पू० शिक्षा मंत्री, स्व० कुमार गंगानन्द सिंह के पूर्वज-डीह पर उनके पितामह की स्मृति में स्थापित हुआ जिसके नामकरण की स्वीकृति सहायक शिक्षा निदेशक (संस्कृत) बिहार, पटना के पत्रांक ५२२६ दिनांक १२ अक्टूबर १९५२ द्वारा मिली;

(२) क्या यह बात सही है कि लगभग १२ वर्षों के बाद दिसम्बर १९७० में अनियमित ढंग से उक्त विद्यालय के नाम से परमानन्द स्मारक शब्द हटा दिया गया, और उसके लिए स्थानीय जनता के विरोध पत्रों को सहायक शिक्षा निदेशक (संस्कृत) ने अनसूना कर दिया;

(३) क्या यह बात सही है कि लोक शिक्षा निदेशक (बिहार) ने तथ्यों की जानकारी लेकर इस परिवर्तन को अनुचित करार देकर पूर्वनाम परमानन्द स्मारक शिवाजी संस्कृत हाई स्कूल को ही जारी रखने का आदेश सहायक शिक्षा निदेशक (संस्कृत) को दिया जिस आदेश का पालन अभी तक नहीं किया गया है;

(४) यदि उपरोक्त खंडो के उत्तर स्वीकारात्मक है तो सरकार इस सम्बन्ध में कौन सी कार्रवाई कबतक करने को विचार रखती है ?

श्री केदार पाण्डेय— (१) दरभंगा जिला के बेनीपुर प्रखण्ड में शिवजर संस्कृतोच्च की स्थापना २३-५-५८ को हुई तथा इसी नाम से २०-७-५८ से बिहा संस्कृत समिति द्वारा दिनांक १०-१-५८ को इसकी स्वीकृति दी गयी। पुनः विद्या लय की प्रबन्ध कारिणी समिति के निर्णयानुसार तथा विद्यालय के मंत्री के अनुरोध पर बिहार संस्कृत समिति के आदेश संख्या ५२२६ दिनांक १८-१०-५८ में इस विद्यालय का नामकरण परमानन्द स्मारक शिवजी संस्कृतोच्च विद्यालय की स्वीकृति दी गयी।

(२) विद्यालय की प्रबन्ध समिति ने तिथि २२-९-७० को प्रस्ताव पारित किया कि संस्था का नाम केवल शिवजी संस्कृतोच्च विद्यालय ही रहने दिया जाय क्योंकि बनैली राय द्वारा दिये गये आश्वासनों के अनुसार इस संस्था की कोई चल या

अचल सम्पत्ति नहीं दी जा रही है। तदनुसार सचिव, बिहान सस्कृत शिक्षा परिषद दिनांक ५-१२-७० को नाम बदलने की स्वीकृति दी गयी। इस प्रक्रिया में कोई अनियमितता नहीं है। सहायक शिक्षा निदेशक (सं०) पटना ने सूचित किया है कि प्राप्त विरोध पत्रों पर उन्होंने छानबीन की पर इन्हें निराधार पाकर ईस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई।

(३) विद्यालय के इस नाम परिवर्तन के विरुद्ध प्राप्त आरोप पत्रों की जाँच प्रखंड विकास पदाधिकारी वेनीपुरी से करायी गयी किन्तु उनका प्रतिवेदन अपूर्ण था, अतः जिला शिक्षा पदाधिकारी, दरभंगा से जाँच प्रतिवेदन देने का अनुरोध किया गया और सचिव, संस्कृत शिक्षा पर्षद को तिथि ११-१२-७१ को आदेश दिया गया कि इस विषय पर जिला शिक्षा पदाधिकारी के द्वारा जाँच प्रतिबेदन प्राप्त होने तक नाम परिवर्तन सम्बन्धी प्रबन्ध समिति के प्रस्ताव की मान्यता को स्थगित रखें। किन्तु लोक शिक्षा निदेशक के एक आदेश की प्राप्ति के बहुत पूर्व सचिव, विहार संस्कृत शिक्षा पर्षद द्वारा नाम परिवर्तन सम्बन्धी अनुमोदन दिया जा चुका है।

(४) जिला शिक्षा पदाधिकारी, दरभंगा को अपनी जाँच शीघ्र पूरा करने के लिए आदेश दिया जा रहा है। उनकी रिपोर्ट मिलने पर उसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जायगी।

———

तुरकौ कौलेज भवन की मरम्मत

४२१। **श्री साधु शरण शाही**—क्या मंत्री, शिक्षा विभाग, यह बतलाने की कृपा करेगें कि—

(१) क्या यह बात सही है कि मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत तुर्की जनता कालेज को १९६७ में समाप्त कर दिया गया;

(२) क्या यह वात सही है कि उक्त कालेज के सारे मकान मरम्मती के विना ध्वस्त होने की स्थिति में है;

(३) क्या यह वात सही है कि उक्त कालेज में लगमग ५० हजार की किताबें पड़ी सड़ रही है जिसे कोई देखने वाला नहीं है;